बहुमुखी प्रतिभा – किशोर कुमार

हिन्दी फ़िल्म जगत में न जाने कितने लोग आए और चले गए। नित नए–नए लोगों का आना–जाना लगा हुआ है। मगर बहुमुखी प्रतिभा के धनी कुछ कलाकार ऐसे भी होते हैं जो अपनी कला के बल पर जिस क्षेत्र में भी क़दम रखते हैं, वहीं कामयाबी का झण्डा बुलंद करते हैं। ऐसे ही प्रतिभा के धनी लोगों में किशोर कुमार का नाम सर्वोपरि है। किशोर कुमार – एक ऐसा नाम जो अपने आप में अनेक विलक्षण विविधताओं को संजोए हुए है।

किशोर कुमार अगर सिर्फ़ पार्श्वगायक ही होते तो भी अमर रहते, वह सिर्फ़ फ़िल्म अभिनेता ही होते तो भी ज़माना उन्हें नहीं भूलता, यदि वह सिर्फ़ फ़िल्म संगीतकार ही रहे होते तो भी उनका मुकाम होता और यदि वे केवल निर्माता–निर्देशक ही होते तब भी उनका अलग स्थान रहा होता। मगर उन्होंने गीतकार, कथा–पटकथाकार सहित फ़िल्म जगत की लगभग सभी प्रमुख विधाओं में बखूबी महारत हासिल की और सफलता प्राप्त की। वे हर क्षेत्र में ही कामयाब रहे अर्थात् 'जैक ऑफ आल ट्रेडस एंड आलसो मास्टर ऑफ सम ' थे।

9 वर्षीय किशोर कुमार

किशोर कुमार बचपन से ही कुन्दन लाल सहगल के भक्त थे। वे अक्सर सहगल के रिकॉर्ड सुनते और उन्हें हूबहू गुनगुनाया करते थे। सहगल से मिलने की चाह और उन्हीं की तरह गाने का सपना लेकर वे मुंबई पहुँचे। प्रारंभ में रुचि न होने के बावजूद अपने बड़े भाई अशोक कुमार के कहने पर किशोर कुमार ने कुछ फ़िल्मों में छोटी–छोटी भूमिकाएं अदा की। अशोक कुमार (दादामुनि) ने किशोर के शौक़ को देखते हुए संगीतकार खेमचन्द प्रकाश से उन्हें मिलवाया। जिस प्रकार हीरे की सही परख जौहरी को ही होती है उसी प्रकार इस हीरे की परख सर्वप्रथम संगीतकार खेमचन्द प्रकाश ने की। उन्होंने किशोर की आवाज़ को सुना, परखा और फ़िल्म ''ज़िद्दी'' (1948) के लिए दो गीत गवाए जिसमें एक एकल (Solo) गीत 'मरने की दुआएं क्यों माँगूं..' और एक लता मंगेशकर के साथ युगल गीत (Duet) 'ये कौन आया रे करके ये सोलह सिंगार..' थे जो कि अभिनेता देव आनन्द पर फ़िल्माए गए थे। फ़िल्म हिट रही और ये दोनों गीत भी उस समय बहुत लोकप्रिय हुए। इसके पश्चात् किशोर कुमार ने फ़िल्मों में बतौर अभिनेता अभिनय करना भी शुरू कर दिया।

एक अनोखी हास्य अभिनय शैली व गायिकी के साथ सन् 1952 तक वे गायक–कलाकार के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनसे पहले और उपरान्त कुछ गायिकी में सफल रहे तो कुछ अभिनय में परन्तु किशोर कुमार दोनों ही क्षेत्रों में बखूबी सराहे गए। गायक–अभिनेता के रूप में जो ख्याति उन्होंने पाई है वह कोई अन्य नहीं पा सका है। वे न केवल अभिनय और गायिकी में बल्कि फ़िल्म जगत के अन्य क्षेत्रों में भी अपने हुनर का प्रभाव छोड़ते चले गए।

उनकी आवाज़ बहुत सुरीली थी जो उन्हें भगवान की एक अद्भुत देन थी कि सुनने वाले गद्गद हो उठते। बिना संगीत शिक्षा के गायिकी में भारतीय फ़िल्म जगत के शीर्ष पर पहुँचना उनकी असीम प्रतिभा और कड़ी मेहनत का ही नतीजा था। जिस प्रकार मुकेश दर्द भरे गीतों में सबसे प्रमुख माने जाते हैं, मन्नाडे शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीतों में, तलत महमूद ग़ज़ल गायिकी में, उसी प्रकार किशोर कुमार मुख्यत: प्यार भरे, मस्ती भरे, झूमते

नाचते गीतों के लिए जाने जाते थे। मुहम्मद रफ़ी ने तो लगभग हर रंग के गीत गाए हैं। उनके अलावा गीतों की विविधता केवल किशोर कुमार के ही गीतों में ही देखने को मिलती है। 1969 में फ़िल्म "आराधना" के साथ ही यह सुरीला तूफ़ान पूरे देश के नौजवान युवक-युवतियों पर उमड़ पड़ा। यद्यपि इससे पूर्व भी वे एक गायक-अभिनेता के रूप में जाने जाते थे परन्तु फ़िल्म "आराधना" के पश्चात् नई पीढ़ी को उनकी गायन-शैली ने बेहद प्रभावित किया। "आराधना" के साथ ही वे पूरी तरह से पार्श्वगायन में जुट गए और फ़िल्मों में अभिनय करना कम कर दिया। तत्पश्चात् वह अन्य कलाकारों की प्रमुख आवाज़ बनते चले गए। देश भर में उनकी गायिकी के प्रभाव को देखते हुए फ़िल्म जगत के सभी प्रमुख निर्माता उन्हें पार्श्वगायन के लिए अनुबन्धित करने के लिए उमड़ पड़े। अब हर अभिनेता अपनी फ़िल्म के लिए किशोर की आवाज़ ही पाना चाहता था। यह किशोर कुमार की गायिकी का प्रभाव ही था जिसने तत्कालीन सभी अभिनेताओं को उनकी आवाज़ का सहारा लेने के लिए विवश कर दिया।

नई पीढ़ी को उनके गायन का अंदाज़ अत्यधिक पसन्द आया जो कि उनकी मृत्यु के पश्चात् आज तक कायम है और सदैव रहेगा। 1969 से 1987 तक अर्थात् उनकी मृत्यु तक का समय फ़िल्म जगत में किशोर युग के नाम से जाना जाता है। किशोर कुमार के गायन काल में 1970 से 1980 तक स्वर्णिम समय रहा। किशोर कुमार का गीतों में स्वर प्रदान करने का अपना अलग ही अंदाज़ था। वह अपनी आवाज़ को अभिनय में उतार देने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे, यदि उन्हें देव आनन्द के लिए गाना है तो उन्हीं के अंदाज़ में अभिनय के साथ गाते, यदि अमिताभ बच्चन के लिए गाना है तो उन्हीं की तरह अपने स्वर को स्वरूप देते। उनका यह मानना था कि जिस कलाकार के लिए उन्हें गाना है, उस कलाकार के लिए उसी प्रकार गाया जाए जिससे ऐसा प्रतीत हो कि वह कलाकार स्वयं ही गा रहा है। उनके गाए हुए सैकड़ों गीत इसके उदाहरण हैं। उनकी इसी गायन शैली की विविधता के कारण उस समय के तीन-तीन सुपरस्टारों देव आनन्द, राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन की वही प्रमुख आवाज़ रहे। इन सुपरस्टारों के लिए सबसे ज्यादा किशोर की आवाज़ ही उपयुक्त साबित हुई। अभिनेता राजेश खन्ना पर तो किशोर की आवाज़ बहुत ही फ़बती थी। सत्तर के दशक में इन दोनों की जोड़ी बेहद लोकप्रिय रही।

किशोर कुमार ने अपने समय के लगभग हर कलाकार के लिए गाया। अपनी उम्र से कहीं कम उम्र के नायकों जैसे सनी देओल, गोविन्दा, अनिल कपूर, जावेद जाफ़री आदि पर भी जीवंत पार्श्वगायन प्रस्तुत करने में किशोर सदैव सफल रहे। यह उनकी गायन शैली का ही कमाल था कि अपने जीवन के अन्तिम समय तक सभी प्रमुख कलाकारों की वे प्रमुख आवाज़ बने रहे। गीत चाहे प्रमुख अभिनेता पर हो या चरित्र अभिनेता पर या किसी अन्य छोटे कलाकार पर, सभी पर उनकी आवाज़ अच्छी लगती थी। फ़िल्म देखने के बाद ऐसा प्रतीत होता जैसे स्वयं अभिनेता ही उसे गा रहा है। विभिन्न कलाकारों पर फ़िल्माए गए गीत जो उनकी गायिकी की विविधता को प्रस्तुत करते हैं जिसमें उन्होंने स्वरों को विभिन्न रूपों में ढाला, उसके कुछ उदाहरण हैं जैसे 'ये

दिल ना होता बेचारा...' (देव आनन्द), 'यहाँ वहाँ सारे जहां में तेरा राज है...' (राजेश खन्ना), 'माई नेम इज़ एन्थनी गोन्साल्विस...' (अमिताभ बच्चन), 'बचना ऐ हसीनो लो मैं आ गया..' (ऋषि कपूर), 'हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है..' (प्राण), 'रात कली इक ख़्वाब में आई..' (नवीन निश्चल), 'साला मैं तो साहब बन गया..' (दिलीप कुमार), 'इक लड़की भीगी भागी सी..' (किशोर कुमार), 'रफ़्ता-रफ़्ता देखो आँख मेरी लड़ी है...' (धर्मेन्द्र), तुमको भी तो ऐसा ही कुछ...' (राजेन्द्र कुमार), 'हाल क्या है दिलों का..' (जीतेन्द्र), 'कच्ची-पक्की सड़कों पे...' (राज कपूर), 'जीवन मिटाना है दीवानापन...' (शम्मी कपूर), 'ओ मेरी ओ मेरी ओ मेरी शर्मीली..' (शशि कपूर), 'भँवरे की गुंजन है मेरा दिल...' (रणधीर कपूर), 'गीत गाता हूँ मैं...' (विनोद मेहरा), 'ओ मनचली कहाँ चली...' (संजीव कुमार), 'मैं तो चला जिधर चले रस्ता..' (संजय ख़ान), 'मुस्कुराता हुआ गुल खिलाता हुआ...' (विनोद खन्ना), 'तेरे चेहरे में वो जादू है...' (फ़िरोज़ ख़ान), 'ऐ दुनिया तुझको सलाम..' (मिथुन चक्रवर्ती), 'पुकारो मुझे फिर पुकारो..' (शत्रुघ्न सिन्हा), 'आने वाला पल जाने वाला है..' (अमोल पालेकर), 'कुसूर आपका हुजूर आपका..' (करण दीवान), 'खिट पिट खिट करे..' (विश्वजीत), 'दिल हो गया शैण्टी फ़्लैट..' (गोप) 'तेरी दुनिया से हो के मजबूर चला..' (परीक्षित साहनी), 'मैं हूँ घोड़ा ये है गाड़ी..' (महमूद), 'गुज़र जाए दिन दिन दिन...' (अनिल धवन), 'आज उनसे पहली मुलाकात होगी..' (राकेश रोशन), 'रूप तेरा ऐसा दरपन में न समाए..' (देव मुखर्जी), 'खाना मिलेगा पीना मिलेगा...' (देवेन वर्मा), 'दिल क्या करे...' (विक्रम), 'दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा..' (उत्तम कुमार) 'इक ऋतु आए..' (विजय अरोड़ा), 'कितने भी तू कर ले सितम..' (कमल हासन), 'हुस्न की वादियों में...' (राज किरण), 'तेरा चेहरा मुझे गुलाब लगे...' (राज बब्बर), 'काटे नहीं कटते ये दिन ये रात...' (अनिल कपूर), 'ये कोरी करारी कँवारी नज़र..' (सन्नी देओल) 'क्या यही प्यार है...' (संजय दत्त), 'बोल बेबी बोल..' (जावेद जाफ़री) आदि।

उनकी गायन शैली इतनी विस्तृत थी कि उन्हें महलों में बसने वालों से लेकर फुटपाथों पर रहने वाले, स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों, उदासी की गहराइयों में डूबे दीवानों से लेकर मनचलों, मसख़रों तक, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी उनके गीत बेतकल्लुफ़ होकर गुनगुनाते थे, आज भी गुनगुनाते हैं और गुनगुनाते रहेंगे। किशोर कुमार के गीतों में ग़म का दरिया और मस्ती का झरना दोनों देखने को मिलते हैं। जितनी जीवन्तता उनके गाए मस्ती भरे गीतों में होती थी, उतने ही गहरे दर्द का अहसास उनके दर्द भरे गीतों में होता था। उनके गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आम आदमी उससे स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करता है और अपने सुख-दु:ख में उन्हें गुनगुना कर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। किशोर के गीत पूरे देश में लोकप्रिय होने के कारण वे राष्ट्रीय एकता के बहुत बड़े सूत्रधार बने हुए थे।

किशोर कुमार ने हर तरह के गीत गाए हैं चाहे गीत में हँसी ठिठोली हो, रोमांस हो, मस्ती हो, डिस्को हो, विरह का भाव हो, जीवन दर्शन की

गहराइयाँ या फिर अथाह दर्द की परिभाषा, हर भाव के गीत उन्होंने लाजवाब तरीके से और मस्त अंदाज़ में गाए। वर्तमान समय का युवा वर्ग भी उनकी आवाज़ सुन कर रोमांचित हो उठता है। विदेशों में भी किशोर कुमार के लाखों चाहने वाले हैं जो उनके गीतों पर आज भी मस्ती में थिरकते हैं, झूमते हैं और उदासी में गुनगुनाते हैं।

यूँ तो किशोर कुमार मुख्यत: प्यार भरे, झूमते गीतों के लोकप्रिय गायक माने जाते थे परन्तु उन्होंने सैकड़ों दर्द भरे गीत भी गाए हैं। उनके ये दर्द भरे गीत मानव हृदय की गहराइयों और जीवन दर्शन पर आधारित होते थे जैसे 'ज़िन्दगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र...' (सफ़र), 'ज़िन्दगी के सफ़र में गुज़र जाते हैं जो मुकाम...' (आपकी क़सम), 'मेरा जीवन कोरा काग़ज़...' (कोरा काग़ज़), 'मेरे नैना सावन भादों...' (महबूबा), 'दु:खी मन मेरे, सुन मेरा कहना...' (फ़ण्टूश), 'कोई हमदम न रहा...' (झुमरू), 'चिंगारी कोई भड़के' (अमर प्रेम), 'घुँघरू की तरह बजता ही रहा हूँ मैं...' (चोर मचाए शोर), 'वो शाम कुछ अजीब थी...' (ख़ामोशी) इत्यादि सैकड़ों गीत ऐसे थे जो उनकी दर्द भरी आवाज़ को अलग पहचान देते थे।

हालांकि किशोर कुमार को संगीत की शिक्षा प्राप्त नहीं थी फिर भी वे संगीतकार की इच्छानुरूप गा दिया करते थे। सुर पहचानने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। संगीतकार के बताने के साथ ही गीत को किस प्रकार गाना है वह भाँप लेते थे। सुरों पर उनकी इतनी अच्छी पकड़ थी कि वे मुश्किल से मुश्किल गीत को आसानी से गा देते थे। विविध प्रकार के गीतों की बारीकियों को पकड़ने की उनमें अद्भुत कला थी। वे किसी भी गीत की रिकॉर्डिंग से पहले कई-कई दिन तक उसका अभ्यास करते और अपनी सन्तुष्टि होने पर ही वे उसे रिकॉर्ड करवाते थे। अपने घर पर नियमित रूप से घण्टों अन्य गायक-गायिकाओं (भारतीय व विदेशी) के गीत सुनना और गीत-संगीत का अभ्यास करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। विदेशी कलाकारों में वे टोपोल और डैनी कॉय के ज़बरदस्त फ़ैन थे। इसके अतिरिक्त उनके पास पाँच हज़ार के करीब देशी विदेशी, अपने व अन्य गायक-गायिकाओं की कैसेटें थी जिन्हें वे अक्सर सुना करते थे। भारतीय फ़िल्म जगत में उन्हें कुन्दन लाल सहगल, पंकज मलिक, मुहम्मद रफ़ी, मुकेश, लता मंगेशकर, मन्नाडे इत्यादि पसन्द थे। स्वयं इतने अच्छे गायक होने के बावजूद उन्होंने एक अभिनेता के रूप में मुहम्मद रफ़ी, मन्नाडे का स्वर भी कई गीतों के लिए ग्रहण किया। यह उनका बड़प्पन ही था कि वे अपने पुत्र अमित कुमार को भी अक्सर कहते "यदि असली गायिकी सीखनी है तो सहगल, रफ़ी के गीतों को बार-बार सुनो।"

आज के गायकों में उन जैसी खनक, विविधता और उन जैसी लगन दखने को नहीं मिलती। 1980 के पश्चात् वे प्राय: गुस्सा होते थे कि उन्हें रिहर्सल करने का मौका नहीं दिया जाता, बार-बार बताया या सिखाया नहीं जाता और आज के गायक इस बात पर नाराज़ होते हैं कि उन्हें सिखाने, बताने की कोशिश की जा रही है।

किशोर कुमार की गायन शैली में एक अनोखी खासियत थी यॉडलिंग की जो उन्हें अन्य गायकों से अलग पहचान देती

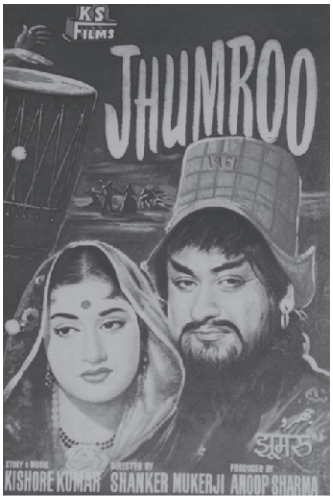

है। अपने गाए हुए सैकड़ों गीतों में उन्होंने इसका सफल प्रयोग किया है। तरह-तरह की आवाज़ें निकालने में माहिर, यॉडलिंग के बेताज बादशाह थे किशोर कुमार। यॉडलिंग उनके गायन की निजी विशेषता थी जिसकी सफल नक़ल आज तक कोई नहीं कर पाया है। शुरूआती दौर में संगीतकार सी. रामचन्द्र ने किशोर कुमार की यॉडलिंग का प्रयोग अपने गीतों में किया और इसे मशहूर किया संगीतकार ओ. पी. नय्यर, सचिन देव बर्मन, राहुल देव बर्मन, सलिल चौधरी जैसे अनेक संगीतकारों ने। किशोर की यॉडलिंग गीत को और भी मधुर बना देती थी। वैसे तो उनके गाए हुए सैकड़ों गीत हैं जिनमें उन्होंने यॉडलिंग का प्रयोग किया है। इसमें एक गीत है 'मैं हूँ झुम झुम झुम झुमरू...' जिसमें उन्होंने इसका खुलकर प्रयोग किया है। यह गीत गाने में इतना कठिन है कि उसी अंदाज़ में गा पाना किसी अन्य गायक के लिए टेढ़ी खीर है। गीत को और अधिक मधुर बनाने के लिए किशोर कुमार हमेशा अपने गीतों में अपनी ओर से कुछ शब्दों को सम्मिलित कर और भी मधुर बना देते थे। इसके अलावा अपने मसख़रे और हास्य गीतों में वे अजीबोगरीब शब्दों का भी प्रयोग करते थे जैसे 'बम चिक बम चिक', 'बड़ के बुधन टीर बा टक्कर'। किशोर कुमार अपनी आवाज़ को बहुत आसानी से भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत करने में सक्षम थे। उसी का एक उदाहरण है फ़िल्म ''हाफ़ टिकट'' का गीत 'आ के सीधी लगी..' जिसमें उन्होंने पुरुष एवं महिला दोनों ही स्वरों में गाया है। इससे उनकी गायिकी की विविधता का पता चलता है।

शुरूआत में खेमचन्द प्रकाश सहित अनिल बिस्वास, सी. रामचन्द्र और ओ. पी. नय्यर ने किशोर कुमार से गीत गवाए।

अभिनय में व्यस्त रहने के बावजूद किशोर कुमार ने न केवल बतौर अभिनेता अपनी हर फ़िल्म के लिए पार्श्वगायन किया बल्कि कुछ अन्य कलाकारों के लिए भी पार्श्व गायन किया, विशेष रूप से अभिनेता देव आनन्द के लिए। उन दिनों संगीतकार अनिल बिस्वास ने किशोर से कुछ बेहतरीन गीत गवाए जैसे 'हुस्न भी है उदास-उदास...', 'आ मुहब्बत की बस्ती बसाएंगे हम...' (फ़रेब) आदि गीत बहुत लोकप्रिय हुए। संगीतकार सी. रामचन्द्र ने ''लड़की'', ''लहरें'', ''आशा'' ''पायल की झंकार'' आदि कई फ़िल्मों के लिए किशोर कुमार से कई गीत गवाए। संगीतकार सचिन देव बर्मन के साथ किशोर कुमार की पहली फ़िल्म ''प्यार'' थी (जिसमें राजकपूर प्रमुख भूमिका में थे)। तत्पश्चात् उनके संगीत निर्देशन में किशोर कुमार ने बहुत मधुर और यादगार गीत गाए। ''मुनीमजी'', ''नौ दो ग्यारह'', ''पेइंग गेस्ट'', ''चलती का नाम गाड़ी'', ''गाइड'', ''ज्वेल थीफ़'', ''तीन देवियाँ'', ''आराधना'', ''प्रेम पुजारी'', ''अभिमान'', ''मिली'' इत्यादि फ़िल्मों के गीत बेहद लोकप्रिय हुए। इसी प्रकार अनेक फ़िल्मों के लिए सचिन देव बर्मन ने किशोर कुमार से गीत गवाए। वे किशोर कुमार की गायन शैली को बहुत पसन्द करते व संगीत की प्रमुख बारीकियों से किशोर कुमार को अवगत करवाते थे। किशोर कुमार को भी सचिन देव बर्मन द्वारा संगीतबद्ध गीत गाने में बहुत आनन्द आता था। वे सचिन देव बर्मन को अपना गुरु मानते थे। इन दोनों की जोड़ी ने सफलता के नए आयाम स्थापित किए।

संगीतकार ओ. पी. नय्यर के संगीत निर्देशन में किशोर ने ''छम छमा छम'', ''नया अन्दाज़'', ''बाप रे बाप'', ''रागिनी'' ''एक बार मुस्कुरा दो'' आदि फ़िल्मों में हर रंग के गीत गाए। संगीतकार सलिल चौधरी ने भी ''नौकरी'', ''परिवार'', ''हाफ़ टिकट'', ''अन्नदाता'' जैसी अनेक फ़िल्मों के लिए किशोर कुमार से कई गीत गवाए। संगीतकार हेमन्त कुमार के संगीत निर्देशन में किशोर ने ''बन्दी'', ''मिस् मैरी'', ''गर्ल फ्रेण्ड'' ''दो दूनी चार'', ''ख़ामोशी'' आदि फ़िल्मों में बहुत से बेहतरीन नग़में गाए साथ ही कई बंगला फ़िल्मों में भी हेमन्त कुमार द्वारा संगीतबद्ध अनेक गीत गाए।

किशोर ने सबसे अधिक गीत संगीतकार राहुल देव बर्मन के संगीत निर्देशन में गाए। इन दोनों की जोड़ी ने युवा वर्ग में रोमांच भर दिया। इनके गीतों पर सभी थिरकते, नाचते, झूमते थे जिन्हें आज भी बहुत पसन्द किया जाता है। राहुल देव बर्मन अपने संगीत में भारतीय तथा पाश्चात्य संगीत का मिश्रण करते थे और उनके इस प्रयोग में गायकों में किशोर कुमार व गायिकाओं में आशा भोसले अधिक उपयुक्त साबित हुए। किशोर कुमार ने संगीतकार कल्याणजी-आनन्दजी, शंकर-जयकिशन, लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल, मदन मोहन, रवि, राजेश रोशन इत्यादि सहित हिन्दी फ़िल्म जगत के लगभग सभी प्रमुख संगीतकारों के संगीतबद्ध सैकड़ों बेहतरीन गीत गाए। संगीतकार खेमचन्द प्रकाश, अनिल बिस्वास से लेकर आज के नवीनतम संगीतकार अन्नु मलिक जैसे संगीतकारों के साथ किशोर ने अनेक गीतों को अपनी मधुर आवाज़ दी।

गीतकारों में किशोर कुमार ने आनन्द बख्शी, मजरूह सुल्तानपुरी और इन्दीवर के लिखे गीत सबसे अधिक गाए हैं।

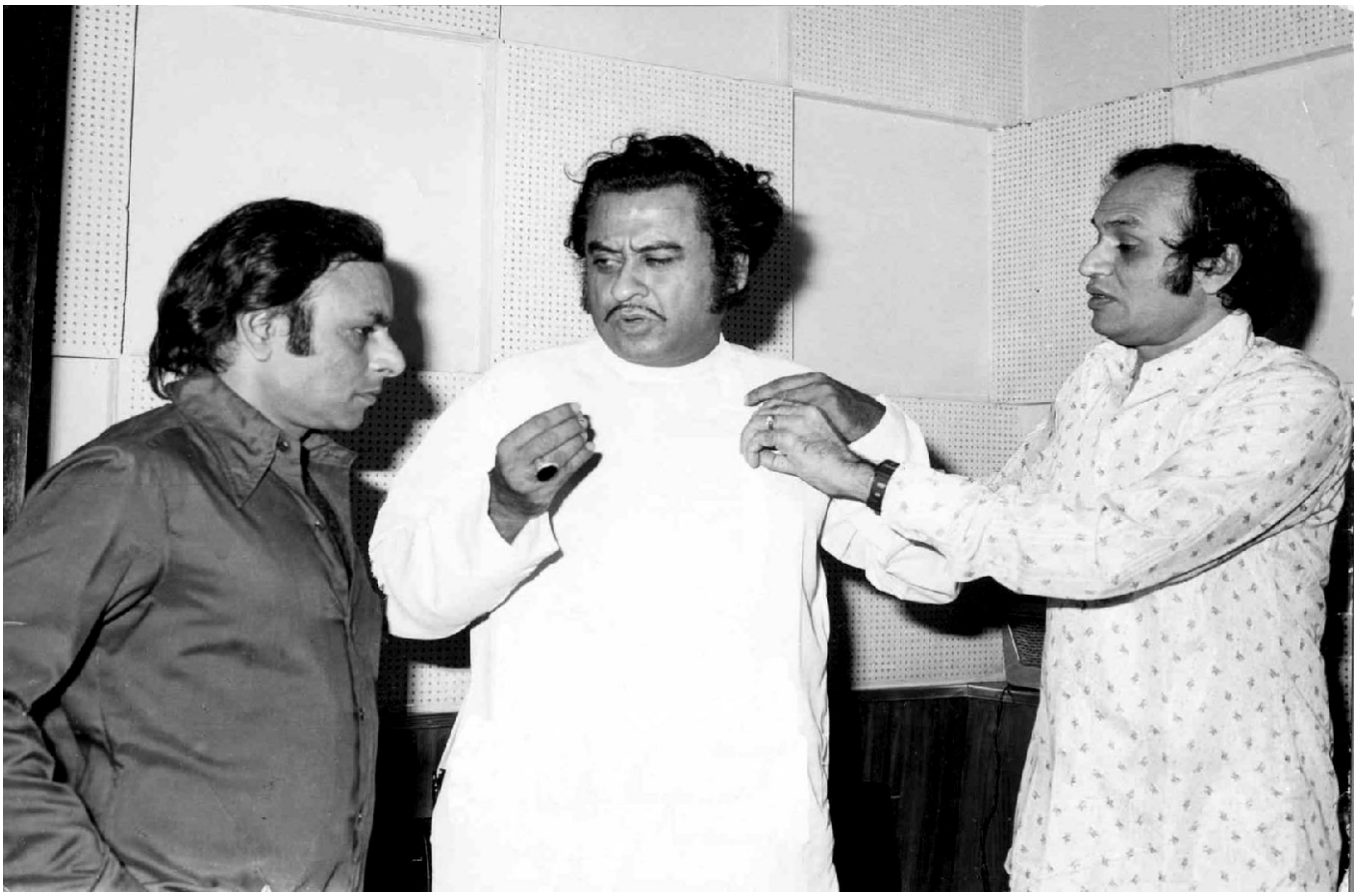

गायिकाओं में आशा भोसले, लता मंगेशकर के साथ और गायकों में मुहम्मद रफ़ी, मन्नाडे, अमित कुमार, महेन्द्र कपूर के साथ सर्वाधिक गीत गाए हैं।

किशोर कुमार ने अभिनेता के रूप में भी दर्शकों को हँसाया, गुदगुदाया और बल्कि रुलाया भी। किशोर कुमार पहले भारतीय अभिनेता थे जिन्होंने हास्य अभिनय को प्राकृतिक, सरल और सहज रूप से प्रस्तुत करके उसे नायक की भूमिका तक पहुँचाया। किशोर कुमार से पहले फ़िल्मों में हास्य भूमिकाएं छोटे-मोटे हास्य सहनायक प्रस्तुत किया करते थे। हास्य भूमिका को किशोर कुमार ने एक नया आयाम दिया। किशोर कुमार के आने के बाद हास्य भूमिकाओं के साथ हास्य नायकों का भी जन्म हुआ और उनका प्रयोग सफल रहा। इसी तरह की कुछ भूमिकाएं आज के लोकप्रिय अभिनेता गोविन्दा भी कर रहे हैं जिनकी सफलता सिद्ध करती है कि जो अंदाज़ किशोर कुमार ने अभिनय शैली में अपनाया वह आज भी पसन्द किया जाता है। अभिनय में चार्ली चैपलिन व टोपोल के वे ज़बरदस्त फ़ैन थे। किशोर कुमार अभिनीत अनेक फ़िल्मों में इनका प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

''हाफ़ टिकट'' ''चलती का नाम गाड़ी'', ''बेगुनाह'' ''पड़ोसन'' इत्यादि फ़िल्में आज भी बहुत पसन्द की जाती है। ये

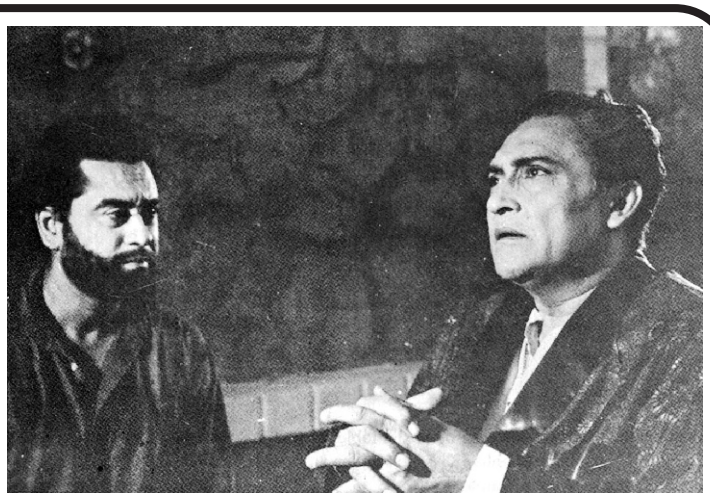

फ़िल्में प्रमाणित करती हैं कि जो छाप किशोर कुमार ने अपने अभिनय में छोड़ी थी वो आज भी कायम है। ''लड़की'', ''आशा'', ''छम छमा छम'', ''भाई-भाई'', ''नई दिल्ली'', ''अधिकार'', ''मुसाफ़िर'', ''बेगुनाह'', ''चलती का नाम गाड़ी'', ''लुको चुरि'' (बंगला), ''हाफ़ टिकट'', ''झुमरू'', ''प्यार किए जा'', ''पड़ोसन'', ''दूर गगन की छाँव में'', ''दूर का राही'', इत्यादि अनेकानेक फ़िल्में लोकप्रिय रहीं जिनमें सजीले और उन्मुक्त अभिनय से किशोर कुमार ने दर्शकों का अनेक वर्षों तक मनोरंजन किया और आज भी इन फ़िल्मों को देखकर दर्शक आत्मविभोर हो उठते हैं। हालांकि किशोर कुमार ने हास्य फ़िल्में अधिक की हैं, इसी कारण वे हास्य अभिनेता के रूप में जाने जाते हैं। ''दूर गगन की छाँव में'', ''दूर का राही'', ''दूर वादियों में कहीं'', ''बन्दी'' जैसी फ़िल्मों में किशोर कुमार एक संवेदनशील कलाकार के रूप में सामने आए। वे हर प्रकार का अभिनय करने में समर्थ थे।

''पड़ोसन'' फ़िल्म में उन्होंने अपने मामा का हुलिया अपनाया था। उनके मामा शास्त्रीय गायक थे जो कि धोती कुर्ता पहने, मुँह में पान चबाते हुए, बालों को माथे पर बिखेरे रहते थे। वे अभिनय में भी नए-नए प्रयोग करते रहते थे। किशोर कुमार ने अपने समय के अनेक प्रख्यात निर्देशकों जैसे फणी मजूमदार, एच. एस. रवेल, मोहन सहगल, एम. वी. रामन, एस. डी. नारंग, बिमल रॉय, शक्ति सामन्त, सत्येन बोस, हृषिकेश मुखर्जी, इत्यादि के साथ काम किया व अनेक सफल फ़िल्में दीं।

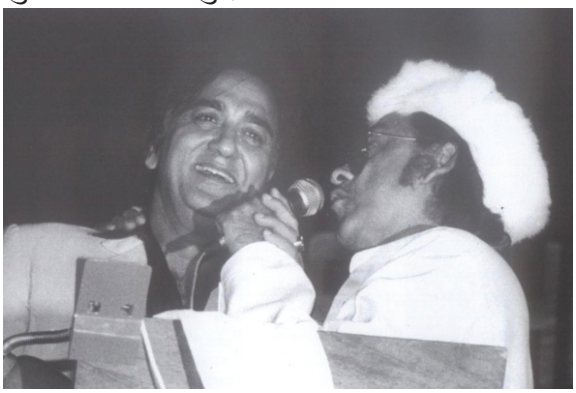

आज जहाँ टेलिविज़न, वीडियो, केबल का जाल सारे देश में फैला हुआ है, वहीं किशोर कुमार की हास्य फ़िल्मों के वीडियो कैसेटों की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है। आज कितने ही टी. वी. चैनल हैं जो कि केबल के माध्यम से जनता तक पहुँच रहे हैं उनमें अक्सर ही किसी न किसी चैनल पर किशोर कुमार के गीत, उनके द्वारा अभिनीत फ़िल्में व अन्य कार्यक्रम दिखाई दे जाते हैं।

फ़िल्म ''झुमरू''(1961) से किशोर कुमार का एक संगीतकार के रूप में सफ़र शुरू हुआ। उन्होंने अपने ही बैनर तले कई फ़िल्मों में मधुर संगीत दिया। संगीत की शिक्षा के अभाव में भी उन्होंने अनेक गीतों की कर्णप्रिय धुनें बनाई जैसे 'कोई हमदम न रहा, कोई सहारा न रहा..', 'ठण्डी हवा ये चाँदनी सुहानी..' (झुमरू), 'राही तू रुक मत जाना..' 'आ चल के तुझे मैं ले के चलूँ..', 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन..', जिन रातों की भोर नहीं है..' (दूर गगन की छाँव में), 'बेक़रार दिल तू गाए जा..', 'जीवन से ना हार ओ जीने वाले..', 'पंथी हूँ मैं उस पथ का..', 'एक दिन और गया..', 'खुशी दो घड़ी की...' (दूर का राही), 'फिर सुहानी शाम ढली...' (बढ़ती का नाम दाढ़ी), 'चलता चला जाऊँ मैं..' (शाबाश डैडी), 'ग़म और खुशी के बीच में...', 'बंद मुट्ठी लाख की...' (चलती का नाम ज़िन्दगी), 'आँखें तुम्हारी दो जहां..', 'ना रो ऐ मेरे दिल..' (ज़मीन आसमान), 'जीवन गाड़ी यूँ ही चलती रहे..', 'मेरा गीत अधूरा है..', 'अंधियारी राहों में..' (ममता की छाँव में)। अपने संगीत में किशोर कुमार ने आशा भोसले, अमित कुमार, हेमन्त कुमार, मन्नाडे, महेन्द्र कपूर, मुहम्मद रफ़ी, लता मंगेशकर, सुलक्षणा पण्डित, इत्यादि से भी अनेक गीत गवाए।

किशोर कुमार ने लगभग 10 फ़िल्मों का निर्माण व निर्देशन किया। ''दूर गगन की छाँव में'', ''दूर का राही'', ''दूर वादियों में कहीं'', ''हम दो डाकू'', ''बढ़ती का नाम दाढ़ी'', ''चलती का नाम ज़िन्दगी'' इत्यादि। उनका सपना था कि दूर कहीं एक ऐसा जहां हो जहाँ चारों ओर प्यार ही प्यार हो, कोई झूठ, फ़रेब न हो। उनकी फ़िल्मों से भी यही संदेश मिलता है। अपनी प्रोडक्शन्स की इन फ़िल्मों में कहानीकार, निर्माता, निर्देशक, संगीतकार, गायक, अभिनेता इत्यादि विविध रूप किशोर कुमार ने स्वयं ही निभाए हैं। अपनी फ़िल्मों में उन्होंने अधिकांशत: ए. इरशाद एवं शैलेन्द्र से अधिक गीत लिखवाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने मजरूह सुल्तानपुरी, इन्दीवर, अंजान इत्यादि के लिखे गीतों को भी संगीतबद्ध किया व कुछ फ़िल्मों में खुद भी गीतकार के रूप में सामने आए। गीतकार के रूप में किशोर दा ने 'मैं हूँ झुम झुम झुम झुम झुमरू...', 'आ चल के तुझे मैं ले के चलूँ..', जैसे यादगार गीत भी फ़िल्म जगत को दिए हैं।

इन सबके अलावा किशोर कुमार ने सैकड़ों स्टेज कार्यक्रम भी किए। कार्यक्रम प्रस्तुत करने में उनका कोई सानी नहीं था। वे बड़े ही जोशीले अंदाज़ में कार्यक्रम की शुरूआत इन पंक्तियों के साथ प्रस्तुत किया करते थे:

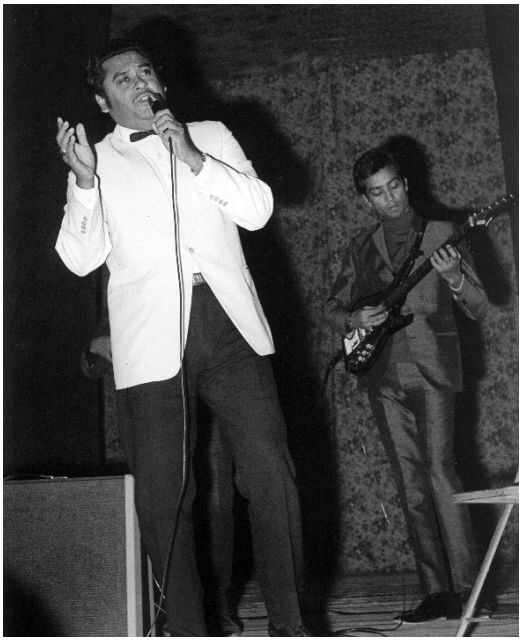

प्यारे बन्धुओऽऽ, संगीत प्रेमियोऽऽ
मेरे नाना-नानियो, मेरे दादा-दादियो, हाँ हाँ
ओ मेरे नाना-नानियो, मेरे दादा-दादियो
मेरे काका-काकियो ओ मेरे मामा-मामियो, हाँ
ओ मेरे काका-काकियो ओ मेरे मामा-मामियो
मेरे यारो-यारियो, ओ मेरे बच्चे-बच्चियो
मेरे यारो-यारियो, मेरे बच्चे-बच्चियो
आप सबको किशोर कुमार खण्डवे वाले
का सप्रेम नमस्कार
अरे मैं जो यहाँ, आया हूँ
हेऽऽ अरे मैं जो यहाँ आया हूँ
ये आप सबका प्यार है, दुलार है, सत्कार है
अरे अब ज्यादा वक़्त न लेते हुए
किशोर कुमार गाने को तैयार हैऽऽ

अपने अधिकांश स्टेज कार्यक्रमों में वे प्राय: बिना किसी तैयारी के जाते और श्रोताओं की पसन्द अनुसार गीत गाते। वे गाते समय नाचते-झूमते व कुछ गीतों के लिए नवयुवक-युवतियों को स्टेज पर आमंत्रित किया करते थे। वे नाचते-गाते-झूमते, हँसते-हँसाते पूरे माहौल को आनन्दमयी बना दिया करते थे। इन कार्यक्रमों के दौरान वे अपनी पसन्द के कुछ दर्द भरे गीत भी गाया करते थे जिन्हें वे हैवीवेट गीत कहा करते थे। गीत गाने के पश्चात् दर्शकों, श्रोताओं का अभिवादन वे थैंक्यू, थैंक्यू, थैंक्यू वेरी

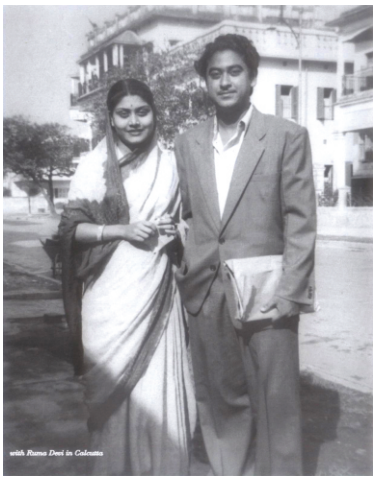

मच, शुक्रिया, धन्यवाद आदि शब्दों के साथ किया करते थे।

किशोर कुमार की पारिवारिक ज़िन्दगी सन्तोषप्रद नहीं रही। ''कुएँ में कूदकर मर जाना, यार तुम शादी मत करना...'' गाने वाले किशोर कुमार ने स्वयं चार शादियाँ की परन्तु उन्हें वैवाहिक सुख बहुत ही कम समय के लिए मिला। अपने जीवन की इन सभी उलझनों के पश्चात् भी वे फ़िल्म जगत में निरन्तर अपनी भूमिका बखूबी निभाते रहे, हँसते रहे, हँसाते रहे, मसख़रे बने रहे परन्तु कुछ गीत जैसे 'दु:खी मन मेरे सुन मेरा कहना, जहाँ नहीं चैना वहाँ नहीं रहना...', 'दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा...', 'खुशी दो घड़ी की मिले...', 'कोई हमदम न रहा कोई सहारा न रहा...' 'घुँघरू की तरह बजता ही रहा हूँ मैं...' ऐसे हैं जो उनके दिल की गहराइयों से निकले जिनमें उनके जीवन का दर्द स्पष्ट झलकता है:

जो तार से निकली है, वो धुन सबने सुनी है
जो साज़ पे गुजरी है, वो किस दिल को पता है

(साहिर लुधियानवी)

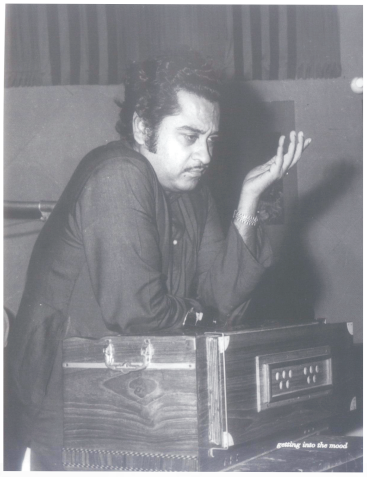

जीवन के अन्तिम वर्षों में किशोर कुमार में एक तरह का विरक्ति भाव जागने लगा था। फ़िल्म संगीत की स्थितियों से तो वे नाखुश थे ही, जीवन की सच्चाई अर्थात् मौत के सामने मनुष्य की मजबूरी, महानगर की भाग-दौड़, झूठ-फ़रेब, छल-कपट इत्यादि के कारण उनमें वैराग्यभाव जागने लगा था और उनकी अंतिम इच्छा थी कि अपना शेष जीवन खण्डवा (मध्य प्रदेश) में ही बिताएं जो कि पूरी न हो सकी।

लगभग चार दशक तक किशोर कुमार ने हर क्षेत्र में सफलता हासिल की। आज भी उनके गाए हुए सैकड़ों गीत दिल को छू जाते हैं और उनके तमाम फ़िल्मी योगदान का समय-समय पर स्मरण किसी न किसी रूप में कराते रहते हैं। आजकल के अधिकांश पार्श्वगायक जैसे अमित कुमार, कुमार शानू, अभिजीत, विनोद राठौर, सुदेश भोसले, बाबुल सुप्रियो आदि किशोर कुमार की गायन शैली में ही गाते नज़र आते हैं, और उन्हीं का अनुसरण करते हैं। कई गायक तो उनके गाए हुए गीतों को वर्ज़न रूप में गाकर ही फ़िल्म जगत में प्रवेश पा सके हैं। वैसे तो आजकल के गायकों की आवाज़ें आज के नौजवान नायकों पर अच्छी लगती हैं परन्तु साथ ही साथ कहीं न कहीं यह भी एहसास कराती हैं कि एक लासानी आवाज़ हमारे बीच नहीं रही। उनकी बहुमुखी प्रतिभा की अनोखी मिसाल फ़िल्म इतिहास के सीने पर सुनहरी नक्काशी के रूप में सदैव अंकित रहेगी। किशोर कुमार के योगदान को भारतीय फ़िल्मों के दर्शक ताउम्र भुला नहीं पाएंगे क्योंकि 'दूर का राही' भले ही 'दूर गगन की छाँव में' चला गया हो परन्तु उनके गाए गीत आज भी हमारी रग-रग में बसे हैं और सदा बसे रहेंगे। अन्त में उनका यही गीत बार-बार याद आता है:

हमीं से है ज़िन्दा वफ़ा और हमीं से है तेरी महफ़िल जवां
हम जब न होंगे तो रो रो के दुनिया ढूँढ़ेगी मेरे निशां... (नीरज)

– कमल धीमान